Determination of Incidence of Tax under Perfect Competition

पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत क्रेता एवं विक्रेता अपनी अपनी वस्तुओं का क्रय विक्रय करते रहते है। दोनों ही वर्गों की आपस में यह पेशकश रहती है कि एक-दूसरे पर करों का भार अधिक से अधिक मात्रा में डाला जा सके। चूंकि पूर्णप्रतियोगिता में क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार भाव का पूर्ण ज्ञान होता है। इसलिए कोई भी विक्रेता अपनी वस्तु को बाजार भाव से ऊँचे मूल्यों में बेचने में समर्थ नहीं हो पाता है। यदि वह ऐसा करता है तो क्रेता उसकी वस्तु की मांग कम कर देता है फलस्वरूप विक्रेता को भी बाजार भावों पर ही वस्तुएं बेचनी पड़ेगी। इसलिए सरकार द्वारा जो वस्तुओं पर कर लगाया जाता है वह का भार विक्रेता अधिक से अधिक क्रेता पर डालने का और उपभोक्ता कम से कम वहन करना चाहते है। अतः कर भार किस पर पड़ेगा यह निम्न बातों पर निर्भर करता है—

(A) वस्तु की मांग की लोच

वस्तु की मांग जितनी ही अधिक बेलोचदार होगी करों का भार उपभोक्ताओं पर उतना ही अधिक पड़ेगा क्योंकि ऐसी वस्तुओं के मूल्य बढ़ने पर भी लोगों के द्वारा वस्तुओं का

उपभोग बढ़ता ही जाता है क्योंकि ये ऐसी वस्तुएं होती है जिसके उपभोग के बिना जीवन का चलना असंभव होता है तब यदि बेलोच मांग वाली वस्तुओं पर सरकार कर लगाते तो उत्पादक करों का पूरा भार उपभोक्ताओं पर टाल देता है क्योंकि मूल्य के बढ़ने पर भी इन वस्तुओं की मांग घटती नहीं है

लोचदार मांग वाली वस्तुओं का मुल्य थोड़ा भी बढ़ने पर उपभोक्ता द्वारा वस्तु की मांग घटा दी जाती है इसलिए लोचदार मांग ~~वाली~~ वाली वस्तुओं के करों ~~का~~ का आंशिक भार ही उपभोक्ताओं पर डाला जाता है और अधिकांश भाग उत्पादक तथा वस्तु के विक्रेता स्वयं वहन कर लेते है इसप्रकार लोचदार मांग वाली वस्तुओं का कर-भार उत्पादकों पर तथा बेलोचदार मांग वाली वस्तुओं का कर-भार उपभोक्ताओं पर पड़ता है इसे निम्न चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है —

(1) <u>पुर्णतया लोचदार मांग</u> –

पुर्णतया लोचदार मांग वाली वस्तुओं पर कर लगने से वस्तुओं का मुल्य बढ़ जाता है फलस्वरूप वस्तुओं की मांग अधिक घट जाती है अतः करों का विवर्तन संभव नही होता है और कर का भार विक्रेता को ही वहन करना पड़ता है इसे निम्न चित्र द्वारा

प्रस्तुत कर सकते है —

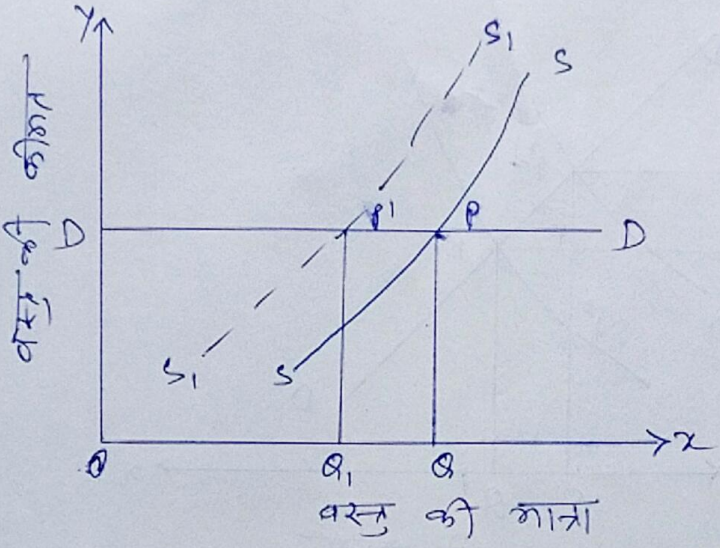

उपरोक्त चित्र में DD मांग की रेखा है। कर लगाने से पूर्व वस्तु का मूल्य OD or QP है तथा वस्तु की मांग OQ तथा वस्तु की पूर्ति रेखा SS है। अब जब सरकार कर लगाती है तो मूल्य बढ़कर QP or Q1P1 हो जाता है लेकिन OQ से घटकर OQ1 हो जाती है। अतः पूर्णतया लोचदार वस्तुओं के करों का विवर्तन नहीं हो सकता है। वैसे व्यवहार में इस प्रकार की मांग की लोच नहीं पायी जाती है।

(11) लोचदार मांग

जब वस्तु की मांग की लोच इकाई से अधिक होती है तब करों का अधिकांश भार उत्पादक वहन कर लेता है और कुछ मात्रा में करों का भार वह उपभोक्ताओं की ओर हस्तान्तरित करता है। इसे हम चित्र द्वारा प्रस्तुत कर सकते है —

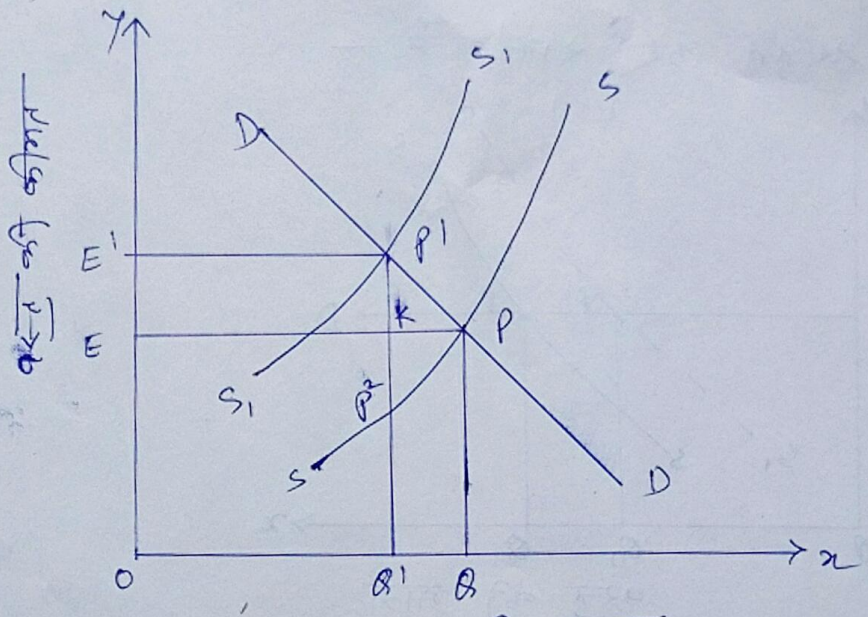

उपरोक्त चित्र में D D मांग की रेखा है। कर लगने से पूर्व वस्तु की मांग एवं पुर्ति का संतुलन P बिन्दु पर होता है ऐसी दशा में वस्तु की कीमत OE या QP के बराबर है। अब वस्तु पर P_2P' के बराबर कर लगने से वस्तु का मुल्य QP से बढ़कर Q'P' हो जाता है। मुल्य के बढ़ जाने से वस्तु की मांग OQ से घटकर OQ' ही रह जाती है। मुल्य के बढ़ने से यहाँ मांग में उतनी कमी नहीं होती जितनी की पुर्वतया लोचदार वस्तु में हुई थी। अतः P_2P' के बराबर कर लगने पर कर की राशि में से P_2K के बराबर कर का उत्पादक अपनी जेब से देता है तथा KP' कर के भाग को उपभोक्ता की ओर विवर्तित कर देता है।

(iii) बेलोचदार मांग

इसप्रकार की वस्तुओं पर यदि कर लगाया